मुझे बचाओ! ४६२

मेरा क्या कसूर?

॥ श्रीहरिः ॥

प्रकाशकीय निवेदन

भौतिक सुखकी उत्तरोत्तर बढ़ती अभिलाषाने मनुष्यको इतना अन्धा बना दिया है कि वह आज अपने ही अजन्मे शिशुकी गर्भपातद्वारा हत्या करता जा रहा है। गर्भपातकी संख्यामें हो रही निरन्तर वृद्धि समाजके सामने गम्भीर चुनौती बन गयी है। इस घिनौने कुकृत्यके कारण मनुष्य महान् अशान्ति, मानसिक सन्ताप आदि अनेक भयानक दुष्परिणामोंका शिकार होता जा रहा है। जहाँ एक ओर भ्रूण-हत्या मानवतापर भयङ्कर कुठाराघात है, वहीं माताके लिये भी बहुआयामी खतरोंका जनक है। माताएँ जहाँ एक ओर गर्भपातके कुकृत्यसे अपने प्रिय संतानको खोती हैं, वहीं दूसरी ओर अपने मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्यके साथ भी खिलवाड़ करती हैं। उनका शरीर रोगोंका घर बन जाता है। अधिकांश महिलाएँ गर्भपातके बाद दुबारा माँ नहीं बन पातीं, आजीवन बाँझपनकी शिकार हो जाती हैं।

गर्भपातकी समस्या आज इतनी विस्फोटक एवं भयावह हो गयी है कि यदि शिक्षित समाज, संत-महात्माओं तथा समाजसुधारकोंका ध्यान इस ओर नहीं गया तो असंख्य, अबोध निरपराध शिशु अपने ही जन्मदाता माता-पिताद्वारा गर्भमें ही काल कवलित किये जाते रहेंगे। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि आजके आधुनिक समाजद्वारा गर्भपात-जैसे भयङ्कर कुकृत्यको सभ्यताका आवश्यक अंग माना जा रहा है। जब पृथ्वीपर मानव ही नहीं रहेंगे तो यह सुख-समृद्धि किस काम आयेगी? अतः इसे आपात्कालीन मानव अस्तित्वका संकट समझकर तुरन्त रोकना—मानवमात्रका प्रथम कर्तव्य हो गया है।

प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन इस दिशामें एक लघु प्रयास है। इसमें गर्भस्थ शिशुकी हत्याका आँखों-देखा हाल है। 'मुझे बचाओ' नामक यह पुस्तक अमेरिकन डॉ० बेनार्ड नाथेन्सनद्वारा बनायी फिल्म 'द साइलेन्ट स्क्रीम' (मूक चीख) के आधारपर लिखी गयी है। इस फिल्मका वीडियो कैसेट भी उपलब्ध है, परन्तु वह सामान्य जनताकी उपलब्धिसे बाहर है। इस फिल्मको देखकर लाखों माताओंका मातृत्व जाग उठा था और उन्होंने गर्भपात न करानेका संकल्प लिया, जिससे अगणित गर्भस्थ शिशुओंकी जान बची। इसे देखकर विदेशोंमें गर्भपातके विरोधमें अनेकों आन्दोलन खड़े हो गये। पुस्तकमें सामान्य जनताके कल्याणार्थ मूक चीखके सचित्र चित्रणके साथ बालकका गर्भमें विकास, भ्रूण-हत्याकी विधियाँ, डॉक्टरोंके सुझाव, अनुभव तथा इस कुकृत्यको रोकनेके लिये कुछ धर्मोपदेशक सन्त-महात्माओं तथा समाजसुधारकोंके विचार हैं। पाठकगण इस पुस्तकको पढ़कर, इसका प्रत्येक क्षेत्रमें प्रचार-प्रसार कर इस महाविनाशको रोकनेका हर सम्भव प्रयास करें—ऐसी प्रार्थना है।

प्रकाशक

॥श्रीहरिः॥

मुझे बचाओ !

(मेरा क्या कसूर ?)

गीताप्रेस, गोरखपुर

गर्भाधानके बाद एक अद्‌भुत नया जीवन आरम्भ होता है।

प्रथम कोशिका फैलोपियन ट्यूबमें दो भागोंमें विभाजित हो जाती है।

दोके चार भाग हो जाते हैं।

दोके सैकड़ों भाग होकर गर्भाशयके भीतरमें एक नया जीवन स्थापित हो जाता है।

गर्भाधानके $5\frac{1}{2}$ सप्ताहके बाद

गर्भाशयमें यह शिशु एक अद्वितीय एकाकी जीव होता है।

गर्भस्थापनके 10 सप्ताह बादमें हाथ और पैर अच्छी प्रकार निकल आते हैं।

गर्भस्थापनके 14 सप्ताह बाद

कभी–कभी एकसे अधिक गर्भ भी गर्भाशयमें स्थापित हो सकते हैं।

गर्भस्थापनके 20 सप्ताह बाद, तेज गतिसे गर्भ बढ़ता है, चूसना शुरू करता है, शीघ्र गर्भाशयके बाहर अपना अस्तित्व कायम करनेलायक हो जाता है।

खामोश-चीख

॥ श्रीहरिः ॥

मूक चीख

मेरा नाम बेनार्ड नाथेन्सन है। एक स्त्री-रोग और प्रसूति-विशेषज्ञ होनेके नाते मुझे विश्वास है कि गर्भपात-सम्बन्धी विषयोंका मुझे अच्छा अनुभव है। सन् 1949 में जब मैं डॉक्टरीका छात्र था, उस समय गर्भ-विज्ञान नहीं था, हमें पढ़ाया गया था कि गर्भस्थ बच्चा गर्भाशयकी ही एक वस्तु है, लेकिन ये केवल माननेकी ही बात थी कि वह मानवीय जीव है या नहीं और उसका अपना अलग अस्तित्व है या नहीं।

लेकिन 1970 के बाद इससे सम्बन्धित सारी धारणाएँ बदल गयीं। उस समय गर्भ-विज्ञान जोर-शोरके साथ चिकित्सा-जगत्में उभरकर आया। इस विज्ञानका विस्फोट Ultrasound अर्थात् 'ध्वनि-तरंगोंद्वारा चित्रण' उपकरणसे गर्भस्थके दिलकी जाँच 'सीटोलॉजी, हिस्ट्रोस्कोपी, रेडियो इम्यूनों केमेस्ट्री' आदि कई यन्त्रोंके कारण हुआ, जो आज गर्भ-विज्ञानके मुख्य अङ्ग बन चुके हैं। 1976 से Ultrasound द्वारा गर्भस्थ बच्चेकी तत्कालीन गतिविधियोंका चित्रण डॉक्टरी उपकरणके रूपमें उपलब्ध है। Ultrasound कक्षमें एक बड़ी परीक्षण-मेज और ध्वनि-तरंगचित्रण-यन्त्र तथा एक विशालकाय मशीन होती है।

अब एक गर्भवती महिला मेजपर परीक्षणके लिये तैयार है। उसका पेट ढका हुआ है। इस यन्त्रका सिरा गर्भाशयके ऊपर रखा है। इस यन्त्रमें मूलरूपसे एक क्रिस्टल होता है, जो उच्च गतिकी ध्वनि-तरंगोंको प्रेषित करता है और एक ट्रान्सड्यूसर, जो उन ध्वनि-तरंगोंकी प्रतिध्वनि एकत्र करता है। ये प्रतिध्वनियाँ कम्प्यूटरके द्वारा एकत्र की जाती हैं, जो सजीव अजन्मे बच्चेकी पहचाने जानेवाली फोटोके रूपमें परिवर्तित हो जाती हैं। बच्चेका चित्र या तो 'रेखीय चित्रण' द्वारा दिखलायी देता है, जो कि अग्रिम गर्भके लिये उपयोगी होता है अथवा क्षेत्रीय चित्रण जो अल्प समयके गर्भके मामलेमें ज्यादा उपयुक्त हो सकता है—जैसा कि इस मामलेमें है।

इस फोटोद्वारा, जो प्रतिध्वनिसे बनती है, हम दिलके वाल्वके खुलने और बन्द होनेतककी क्रियाको बारीकीसे देख सकते हैं। पहली बार माता और पिता अपने अजन्मे बच्चेको इन अद्भुत तकनीकों, उपकरणों और मशीनोंद्वारा देख पा रहे हैं। ये तकनीकें और उपकरण निःसन्देह सिद्ध करते हैं कि यह अजन्मा बच्चा हमारी तरह ही जीवित मानव है और मानवसमुदायका ही एक सदस्य है। किसी भी तरह वह हमसे अलग नहीं है, हर दृष्टिकोणसे वह बिलकुल हमारी ही तरह है। अब पहली बार हमारे पास इस तरहकी तकनीक उपलब्ध है, जिसके द्वारा स्वाभाविक प्राणीके दृष्टिकोणसे गर्भपातको देखा जा सकता है।

हम पहली बार देख सकेंगे कि किस तरह गर्भपात करनेवाला डॉक्टर लोहेके इन बेरहम औजारोंसे अजन्मे बच्चेको छिन्न-भिन्न करते हैं, कुचलते हैं और उसे नष्ट करते हैं।

यहाँ हम बच्चेके जन्मके पूर्वके विकासको देख रहे हैं, जो वस्तुतः बिलकुल आरम्भसे अन्ततकके विकासका निरूपण है। यहाँ शिशु 4 सप्ताह, 8 सप्ताह, 12 सप्ताह, 18 सप्ताह, 20 सप्ताह और 28 सप्ताहका दिखाया गया है। आप देख सकते हैं कि इस विकासकी स्थितिमें इस प्राणीके आकार-प्रकारमें कोई क्रान्तिकारी या नाटकीय परिवर्तन नहीं आया है। यह 12 सप्ताहका प्राणी एक पूर्ण विकसित और पहचाने जाने योग्य इन्सान है। इसका मस्तिष्क कम-से-कम 6 सप्ताहसे

गर्भवती महिला मेजपर परीक्षणके लिये तैयार है।

काम कर रहा है। सम्भवतः इसका हृदय 8 सप्ताहसे धड़क रहा है और अन्य मानवीय कार्य भी किसी भी रूपमें हमसे भिन्न नहीं हैं।

ये प्रसंग विलियम्स आस्ट्रिचिकके 1980 के 16 वें संस्करणका है। यह एक मानक पाठ्य-पुस्तक है, जो अमेरिकाके प्रत्येक चिकित्सा-विद्यालयमें उपयोगमें लायी जाती है। 1980 में छपी इस किताबकी प्रस्तावनामें सचेत करते हुए इस तरह लिखा गया है—'हम हर्षपूर्वक उस युगमें प्रविष्ट हुए हैं, जिसमें गर्भको भी पूर्णरूपसे दूसरे रोगीकी संज्ञा देकर उसका उपचार कर सकते हैं।' क्या कुछ वर्ष पूर्व किसीने सोचा था कि हम गर्भका उपचार भी कर सकते हैं? पारम्परिक चिकित्सा-विज्ञानके सिद्धान्तों और उनके द्वारा दिये गये समादेशोंके अनुसार हमें अपने रोगीको नष्ट नहीं करना चाहिये, जिसका जीवन बचानेकी हमने शपथ ली है।

आइये, हम देखें कि गर्भपात हमारे इस दूसरे रोगीके साथ क्या करता है।

हम देख रहे हैं कि एक बारह सप्ताहका अजन्मा बच्चा गर्भाशयमें है और गर्भाशय बच्चेको मांसपेशियोंमें लपेटे हुए है। गर्भपातकर्ता अपनी प्रक्रिया आरम्भ करता है। वह पहले स्पैकुलम नामक उपकरणको महिलाके योनि-द्वारपर रखेगा और फिर उपकरणको इस प्रकार खोलेगा कि गर्भाशयका द्वार दिखायी दे। यह गर्भाशय है। गर्भाशयद्वारके दिखायी देनेके बाद गर्भपातकर्ता एनाकुलम नामक उपकरण लेगा और उसे स्पेकुलमके द्वारा गर्भाशयके द्वारपर इस तरह सुरक्षात्मक ढंगसे कसेगा, जिससे एनाकुलमका शिकंजा गर्भाशयके द्वारपर मजबूत हो जाय।

अगला उपकरण जो इस स्थानपर लाया गया है, उसे ध्वनि-यन्त्र कहते हैं। उसके बाद यह उपकरण गर्भाशयमें लगाया जाता है और तत्पश्चात् उसे हटाया जाता है, जिससे कि गर्भपातकर्ताको यह सुनिश्चित हो जाता है कि गर्भाशय वास्तवमें कितना गहरा और बड़ा है तथा उसके बाद चौड़ा करनेवाले यन्त्रका सिर और ये लोहेके घुमावदार उपकरण गर्भाशयके द्वारको इस तरह प्रभावशाली ढंगसे खोलनेके लिये उपयोगमें लाये जाते हैं, जिससे कि गर्भपातकर्ताद्वारा उपकरणको सही जगह बैठाया जा सके।

अब गर्भपातकर्ता सबसे पहले सबसे पतले उपकरणको गर्भाशयमें डालकर गर्भाशयके द्वारको खोलता है। फिर उसी उपकरणको थोड़ा-सा नीचेकी ओर घुमाकर उसे निचले सिरेपर लाया जाता है और खोलनेवाले उपकरणको क्रमशः विभिन्न खुले रास्तोंसे गुजारकर बड़े सिरेतक ले जाया जाता है।

फिर वह सक्शन ट्यूब नामक उपकरण लेता है, जिसको खींचनेवाला उपकरण भी कहा जाता है। उसे उपयोगसे पूर्व strile पात्रमें लाकर जोड़ा जाता है। फिर उसे खुले गर्भाशयके द्वारके द्वारा गर्भाशयतक पहुँचानेके लिये अन्दर डाला जायगा और फिर बच्चेके चारों ओर स्थित थैलीको छेदा जायगा, जिससे Ambiotic नामक तरल पदार्थ बाहर निकल जायगा। अब यह उपकरण बच्चेके सीधे सम्पर्कमें आयगा, जिसके सिरेपर लगभग 55 या 60 मि० मी० पारेके दबावका उपयोग किया जाता है, जो कि एक लम्बी-सी सक्शन ट्यूबसे दूसरी ओर गर्भपात उपकरणसे जुड़ता है, फिर सक्शन ट्यूबकी नली शरीरके टुकड़े-टुकड़े करना आरम्भ करती है। ये टुकड़े एक-एक करके अलग किये जाते हैं और उपकरण उन्हें बाहर खींचता है। यह क्रिया तबतक चलती रहती है, जबतक कि शिशुके शरीरके कुछ चीथड़े और सिर शेष रह जायँ।

इस उपकरणद्वारा बच्चेका सिर समूचा बाहर नहीं निकल सकेगा, क्योंकि यह नलीसे काफी बड़े आकारका होगा। यह यन्त्र जिसे मजबूत चिमटी कहा जाता है, इसको खुले हुए गर्भाशयके

4 सप्ताह

8 सप्ताह

12 सप्ताह

द्वारसे गर्भाशयमें डाले जानेको आसान बना देता है। अब गर्भपातकर्ता गर्भाशयके अन्दर तैरते हुए सिरको इस चिमटी-जैसे उपकरणके छल्लोंसे पकड़नेकी कोशिश करता है। इसके बाद सिरको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें तोड़ करके उसके तत्त्वोंको बाहर निकाला जाता है और अन्तमें हड्डियोंको। इस तरह गर्भपातकी प्रक्रिया समाप्त हो जाती है।

हमने देख लिया है कि 12 सप्ताहका बच्चा Ultrasound के पर्देपर कैसा दिखता है। हमने मशीनोंको देखा और साथ ही देखा कि 12 सप्ताहके बच्चेका गर्भपात किस विधिसे किया जाता है।

अब हम पहली बार एक फिल्म देखने जा रहे हैं, जो तत्काल Ultrasound चित्रणसे बनायी गयी है और जिसमें जीते-जागते 12 सप्ताहके बच्चेका गर्भपात किया गया है। यह ध्यान रखे कि यह कोई अग्रिम स्थितिके गर्भपातकी अनोखी घटना नहीं है, यह गर्भपात उन चार हजार गर्भपातोंमेंसे एक है, जो प्रतिदिन अमरीकामें किये जाते हैं। इस फिल्मको सन् 1984 में एक गर्भपात क्लिनिकमें तैयार किया गया है। जिसने यह गर्भपात किया वह एक जवान डॉक्टर था, जो दो अलग-अलग गर्भपात क्लिनिकोंमें काम कर रहा था। इस समयतक उसने लगभग 10,000 गर्भपात इस छोटी-सी उम्रमें कर डाले थे। जब उसे इस फिल्मके सम्पादनको देखनेको कहा गया तो वह अपने कियेपर इतना स्तब्ध हो गया कि कुछ क्षणके लिये कमरेसे बाहर निकल गया, कुछ देर बाद वापस आया और फिल्मका सम्पादन पूरा किया, परन्तु फिर उसने कभी गर्भपात नहीं किया। वह नवयुवती जिसने तत्काल Ultrasound कैमरेसे फोटो ली, वह स्त्रियोंकी पक्षधर थी और गर्भपातकी प्रबल समर्थक थी, किन्तु सम्पादनके दौरान जो कुछ उसने देखा उससे वह इतनी दुःखी हुई कि उसने फिर कभी गर्भपातकी बात नहीं की।

अब हम वास्तविक फिल्मकी ओर चलते हैं। अभी आप 12 सप्ताहके एक अजन्मे बच्चेका Ultrasound चित्र देख रहे हैं। बच्चा अब इस स्थितिमें है। आप अभी यहाँ उसका सिर देख रहे हैं। बच्चेका शरीर यहाँपर है और इस चित्रमें बच्चेका हाथ मुँहमें जा रहा है। अगर आप ध्यानसे देखें तो आप स्पष्टरूपसे बच्चेकी आँख और उसके पासकी गोलाकारको तथा उसकी नाक, मुँह और यहाँतक कि दिमागकी नसोंको भी देख सकते हैं। यह दिमागमें तरल पदार्थसे भरी हुई जगह है। हम यहाँ बच्चेके शरीरके आगेकी पसलियोंको पीछेकी रीढ़की हड्डियोंसमेत देख सकते हैं। यहाँ मांसपेशियोंका दानेदार भाग जो क्षेत्रके ऊपर है, प्लेसेन्टा यानी जेर-जैसा लगता है। जो बच्चेके जन्मके साथ-साथ बाहर निकलता है। अब हम यहाँ नीचे देख सकते हैं, बच्चेकी जंघा और बच्चेके शरीरके नीचेके हिस्सोंको—इस तरह शरीरसे बाहर आते हुए।

आइये, अब हम क्रियाकी तरफ चलते हैं। अब हम यहाँ बच्चेकी छातीमें उसके दिलको धड़कते देख रहे हैं। दिल 140 प्रति मिनटकी गतिसे धड़क रहा है। अब हम बच्चेको गर्भाशयमें तैरते हुए देख सकते हैं। हम उसे समय-समयपर अपनी अवस्था बदलते हुए देख सकते हैं। बच्चा अभी भी इस दिशामें स्थित है और बच्चेके मुँहमें उसका अँगूठा है, मानो बच्चा अपने सुरक्षित स्थानमें आरामसे हिल-डुल रहा है। अब हम जिस छायाको पर्देके नीचेकी ओर देख रहे हैं, वह खींचनेवाली सक्शन टिप है। हमने सक्शन टिपको जान करके इस तरह रँग दिया है कि वह स्पष्टरूपसे दिखायी दे। गर्भपातकर्ताने गर्भाशयके द्वारको फैला दिया है। वह अब सक्शन टिप अन्दर डाल रहा है, जिसे आप पर्देपर आगे-पीछे होते हुए देख सकते हैं। अब आप यह भी देख सकते हैं कि सक्शन टिप जो यहाँ है—बच्चेकी तरफ बढ़ती जा रही है। बच्चा उससे दूर हटता है और बहुत उत्तेजित होकर उग्ररूपसे हलचल करता है। बच्चा अब और अधिक उत्तेजित

16 सप्ताह

18 सप्ताह

तरीकेसे घूमता है, उसकी स्थिति समय-समयपर बदल रही है। वह अब पुनः पीछे हट रहा है, जबकि सक्शन टिपने बच्चेको अभी भी छुआतक नहीं है। फिर भी बच्चा भयंकर रूपसे डर रहा है और अपने प्राणोंको बचानेकी भरपूर कोशिश कर रहा है।

अब बच्चा पुनः स्पष्टरूपसे दिखायी दे रहा है और सक्शन टिप फिर एक बार पर्देके ऊपर जगह-जगह चमक रही है। अब बच्चेका मुँह खुला है, जिसे हम एक क्षणमें पुनः एक स्थिर फोटोमें देखेंगे। सक्शन टिप जिसको आप पर्देके निचले भागमें हिंसक प्रकारसे आगे-पीछे होता हुआ देख रहे हैं, यह वास्तवमें प्राणघातक यन्त्र है, जो अन्ततः बच्चेके चीथड़े करके उसे नष्ट कर देगा। तरल पदार्थके फूटने और थैलीके फटनेके पश्चात् ही सक्शन टिप बच्चेके पास आ सकती है। गर्भपातकर्ताद्वारा बच्चेके शरीरको पकड़नेके प्रयासमें हम सक्शन टिपको आगे-पीछे होता देख सकते हैं। अब हम स्थिर फोटोमें एक खामोश चीखके साथ बच्चेका पूरी तरह खुला हुआ मुँह देख सकते हैं। यह 'खामोश चीख' है। बच्चा अपने ऊपर स्पष्टरूपसे प्राणघातक खतरा महसूस कर रहा है।

अब दिलकी धड़कन बहुत तीव्र हो गयी है और बच्चेके शरीरकी हरकतें भी बहुत तेज हो गयी हैं। बच्चा अपने सुरक्षित स्थलपर खतरा महसूस कर रहा है। बार-बार पीछे हट रहा है। कोई भी उसे गर्भाशयके बायीं ओर हटते, गर्भपातकर्ताद्वारा उसके जीवनको समाप्त करनेवाले यन्त्रोंसे दयनीय तरीकेसे बचनेकी कोशिश करते हुए देख सकता है। इस दौरान बच्चेके दिलकी धड़कन प्रत्यक्ष रूपसे तेज हो गयी है और इसकी गति 140 से बढ़कर 200 प्रति मिनटतक हो गयी है, जिसे हम नाप सकते हैं। अब यह बच्चा निःसंदेह सबसे बड़ा प्राणघातक खतरा महसूस कर रहा है। अब थैलीकी झिल्लीको तोड़ दिया गया है और तरल पदार्थ बाहर निकल गया है। अब हम बच्चेके चारों ओरके तरल पदार्थको नहीं देख रहे हैं।

एक बार जब तरल पदार्थ बाहर निकल जाता है तब सक्शन टिप बच्चेके शरीरको अच्छी तरहसे पकड़ लेती है। बच्चेके शरीरको गर्भपातकर्ताद्वारा सक्शन टिपपर उलटा दबाव देकर नीचेकी ओर खींचा जा रहा है। उसके शरीरको विधिवत् रूपसे चीरकर सिरसे अलग कर दिया गया है। बच्चेका सिर अब इस दिशामें है। मैं अब बच्चेके सिरकी रूपरेखा दिखा रहा हूँ। शरीरके नीचेका हिस्सा पहले ही खत्म हो चुका है और हम सक्शन टिपको पर्देपर एक प्रचण्ड तूफानकी तरंगोंकी शृङ्खलाकी तरह आगे-पीछे बार-बार चमकता हुआ देख सकते हैं। क्योंकि सक्शन ट्यूब अब बच्चेको जकड़े हुए है। इसलिये वह बच्चेको आगे-पीछे धकेल रही है। इस प्रकार गर्भपातकर्ता बच्चेपर अपना खिंचाव डाल रहा है, परन्तु बच्चेका सिर अब भी इस स्थानपर स्पष्ट है। पर अब शरीर वहाँ नहीं दिखायी देता। वह सिरसे फाड़कर अलग कर दिया गया है।

अब जो कुछ हम इस समय देख रहे हैं, वह सिरका 'मिड लाइन ऐको' है और पिचवल या हड्डियोंके टुकड़े हैं। यह 12 सप्ताहके बच्चेका सिर है, जिसे मैं यहाँ दिखा रहा हूँ। उसका समूचा सिर गर्भाशयसे बाहर निकलनेके लिये बहुत बड़ा है। अब सिरको पकड़नेके लिये गर्भपातकर्ताको इस यन्त्रका उपयोग करना पड़ेगा, जिसे मजबूत चिमटी कहते हैं। गर्भपातकर्ता इस यन्त्रसे सिरको इस तरह पकड़कर उसको कुचलेगा और उसके टुकड़े-टुकड़े करके गर्भाशयसे बाहर निकालेगा।

गर्भपात करनेवाले और बेहोश करनेवाले डॉक्टरोंके बीच एक गुप्त भाषा होती है। अपने-आपको इस घृणित कामसे छुपानेके लिये गर्भपातकर्ता और बेहोशकर्ता सिरको, जिसे वह अब निकालना चाहते हैं, नम्बर एक कहकर बुलाते हैं। बेहोशकर्ता गर्भपातकर्तासे पूछता है—क्या

नम्बर एक बाहर आ गया है? क्या हमारा काम खत्म हो गया है? अब इस यन्त्रके हाथों अर्थात् ब्लेडोंको चित्रमें कभी-कभी चमकते हुए देख रहे हैं। सिर गर्भाशयमें इधर-उधर तैर रहा है। यहाँ इस यन्त्रके हाथ अर्थात् ब्लेड सिरके नजदीक आ रहे हैं और सिरको इस मजबूत चिमटीने जकड़ लिया है। अब सिरको नीचे गर्भाशयके द्वारकी ओर खींचा जा रहा है। अब हम जो देख रहे हैं, वह केवल मांसके चीथड़े हैं। हड्डीके टूटे हुए कुछ टुकड़े और तन्तुओंके कुछ टुकड़े हैं, जो इस बातका प्रमाण है कि कभी यहाँ एक छोटा-सा जीवित निःसहाय मानव था।

आइये, अब हम अपने समाजपर, गर्भपातके प्रभावपर विचार करते समय पिछले बीस वर्षोंमें वास्तवमें जो हुआ—उसके आँकड़ोंपर नजर डालें। हमारे पास विश्वसनीय आँकड़े हैं, जो साबित करते हैं कि सन् 1963 में कुख्यात 'रूजी बॉय' के फैसले 'जिसके अन्तर्गत गर्भपातको कानूनी स्वीकृति मिली', के बहुत पहले अमेरिकामें गैर कानूनी गर्भपातोंकी संख्या लगभग एक लाख थी और कानूनी गर्भपातोंकी बहुत कम।

सन् 1973 में 'रूजी बॉय' के फैसलेके इस देशमें लागू होनेके पहले सालमें सात लाख पचास हजार गर्भपात हुए। सन् 1983 में, जिस सालके पूरे आँकड़े हमारे पास हैं, गर्भपातकी संख्या 15 लाख थी।

आइये, अब गर्भपातको एक उद्योगके रूपमें देखें। पिछले वर्ष इस देशमें 15 लाख गर्भपात किये गये और औसतन एक गर्भपातकी कीमत दस हजारसे बारह हजार रुपये है। इसमें प्रत्येक वर्षमें सत्रह सौ पचास करोड़से लेकर इक्कीस सौ करोड़ रुपयोंका उद्योग उत्पन्न किया है, जो इसे दुनियाके 500 सबसे बड़े उद्योगोंमें स्थान दिलाता है। इस राशिका नब्बे प्रतिशत भाग इन चिकित्सकोंका व शेष भाग उन उद्योगपतियों, जिनके क्लिनिक हैं, की जेबोंमें जा रहा है।

हालहीमें हमने इन क्लिनिकोंकी जाँच की है। ये क्लिनिक देशमें Fast Food जलपान गृहकी तरह अधिकृत किये जा रहे हैं। हम जानते हैं कि कैलीफोर्निया और दक्षिण-पश्चिम, यहाँतक कि दक्षिण पूर्व अमेरिकामें ऐसी अनेक शृङ्खलाएँ हैं। इस बातका भी प्रमाण है कि अब यह क्लिनिक अमेरिकाके अपराधी गुटोंके हाथोंमें पड़ते जा रहे हैं और गर्भपातसे प्राप्त पैसा न केवल गर्भपातके शिकार मासूम लोगोंके खूनसे रँगा हुआ है, बल्कि अमेरिकाके अपराधी गुटोंके गन्दे हाथोंमें भी है। गर्भपातके बारेमें चर्चा करते हुए हमें यह भी समझना चाहिये कि उसका शिकार न केवल अजन्मा बच्चा है, बल्कि अजन्मे बच्चोंकी तरह औरतें स्वयं इसका शिकार हैं। औरतोंको अजन्मे बच्चेके सही स्वरूपके बारेमें नहीं बताया जाता है। गर्भपात वास्तवमें क्या है? इस तथ्यसे उन्हें अवगत नहीं कराया जाता है। औरतें बढ़ती हुई संख्यामें सैकड़ों, हजारोंमें, यहाँतक कि लाखोंमें अपने गर्भाशयोंको छेदित, रोगी और नष्ट करवा चुकी हैं। औरतें बाँझ व बधिया कर दी जाती हैं। सिर्फ उसी ऑपरेशनके फलस्वरूप—जिसके विषयमें सही ज्ञान नहीं होता।

ये फिल्म व अन्य आनेवाली फिल्में किसी भी औरतकी जानकारीके लिये दिखायी जानी अनिवार्य होनी चाहिये। इससे पहले कि वह अपने-आपको इस क्रियाको सौंपनेकी स्वीकृति दें।

मैं 'नेशनल एबार्शन राइट एक्शन लीग' को दोषी ठहराता हूँ। मैं माता-पिताको दोषी मानता हूँ तथा इसके सभी सह-षड्यन्त्रकारियोंको भी दोषी मानता हूँ, जो इस गर्भपातके उद्योगमें शामिल हैं। उस षड्यन्त्रके लिये, जिसके अन्तर्गत महिलाओंको गर्भपातके सही स्वरूपके बारेमें अंधकारमें रखा जाता है। मैं गर्भपातके उन सभी समर्थकोंको चुनौती देता हूँ कि इस तत्कालीन वीडियो टेपको या इसके समान किसी और टेपको उन सभी औरतोंको गर्भपातके लिये अपनी सहमति देनेसे पूर्व दिखाये।

इस जकड़नेवाले औजारका प्रयोग करके इसके द्वारा गर्भाशयमें शिशुको ढूँढकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसकी जीवन-लीला समाप्त की जाती है।

अब मैं सोचता हूँ कि मैं गर्भपातके विषयमें कुछ जानता हूँ। मैं सन् 1969 में एक 'एनुरल' नामक संस्थाके संस्थापकोंमेंसे एक था, जो अब 'नेशनल एबोर्सन राइट एक्शन लीवा' के नामसे जानी जाती है तथा दो वर्षोंके लिये मैं पश्चिम दुनियाके सबसे बड़े गर्भपात क्लिनिकका निर्देशक भी था। इस समय हमारे पास एक विज्ञान है, जिसे 'गर्भ विज्ञान' के रूपमें जाना जाता है, जो हमें मानव-गर्भके अध्ययनका अवसर देता है। इन सब अध्ययनोंका यह निष्कर्ष निकलता है कि अजन्मा बच्चा बिना किसी अपवादके एक मानव है, जो हम सबसे अभिन्न है और हमारे समाजका एक अभिन्न अङ्ग है।

कभी भी जीवित मानवकी हत्या करनेसे तो सामाजिक समस्या हल नहीं हो जाती। मैं विश्वास करता हूँ कि इस गर्भपातरूपी हिंसाका सहारा लेना समाजका घोर नैतिक पतन है। मैं इस बातपर विश्वास नहीं करता हूँ कि अमेरिकी लोग, जिन्होंने चन्द्रमापर आदमी भेज दिया, इस हिंसाके अतिरिक्त कोई और बेहतर समाधान नहीं ढूँढ सकते। मैं सोचता हूँ कि अब हम सबको, यहाँ अपने-आपको एक अथक प्रयास करनेके लिये समर्पित करना चाहिये। ऐसे बेहतर समाधानके लिये—जिसमें प्यार, करुणा और मानव-जीवनकी प्राथमिकताका समान मिश्रण हो।

अन्तमें मुझे यह कहना है कि इस हत्याको यहाँ और अभी रोको।

मानव-अधिकार अथवा महिला-अधिकार

माँके जीवनकी सुरक्षाके उपाय कानूनकी दृष्टिमें कानूनी है। चिकित्सकोंको यदि सम्भव हो तो माँ एवं बच्चे दोनोंके जीवनको बचानेका प्रयास करना चाहिये, किन्तु चिकित्सकोंका कहना है कि कानूनके अन्तर्गत उनके लिये, गर्भपातके लिये मना करना कदापि असंभव है।

गर्भपातके पक्षमें दिया जानेवाला सबसे प्रबल तर्क मात्र इस बातपर बल देता है कि 'महिलाको निर्णय लेनेका अधिकार है', किन्तु स्वेच्छासे कुछ भी करनेका निर्णय लेनेका कोई आम अधिकार उपलब्ध नहीं है। हमें कुछ करनेका निर्णय लेनेका अधिकार है। खानेका, पीनेका, किसी भी राजनीतिक दलको मत देनेका आदि, किन्तु हमें बैंक लूटने, उपद्रव करने या वृद्ध महिलाओंको ठगनेका निर्णय लेनेका अधिकार नहीं है।

अतः गर्भपात कानून किस प्रकारका कानून है? क्या यह महिलाको छोड़ किसी औरको प्रभावित किये बिना केवल एक मांसके टुकड़ेको हटाना भर है अथवा वास्तविकतामें यह किसीकी हत्या है? निःसन्देह गर्भपातमें एक मासूम एवं निरपराध मनुष्यकी हत्या अनिवार्य है।

मानव-अधिकार सबके लिये समान है तथा सामाजिक अथवा राजनैतिक सुलभताके लिये किसी वर्गके व्यक्तियोंको इससे वंचित नहीं रखना चाहिये। अजन्मे बच्चे निर्बल तथा निःसहाय होते हैं। यह उन्हें अनावश्यक समझनेका कोई कारण नहीं है। इसी कारणसे निर्णय लेनेका अधिकार अनैतिक है।

लोगोंको अपने बच्चोंकी हत्या करनेका निर्णय लेनेका अधिकार कदापि नहीं है। यह कहना कि हमें दूसरोंपर अपनी नैतिकता लादनेका कोई अधिकार नहीं—सर्वथा एक बकवास है। जहाँपर मूल मानव-अधिकार खतरेमें हो, वहाँपर कानूनको उनकी रक्षा करनी चाहिये।

हम अपने ''जीवन-संरक्षण'' अभियानमें हमारे समाजके सबसे छोटे एवं निर्बल सदस्यको नष्ट करनेकी भर्त्सना करते हैं। हम अजन्मे बच्चेके अधिकारोंके संरक्षणकी बात कहते हैं।

Society for Protection of unborn child chenni—600112

रोग–समस्याएँ

गर्भाशयमें सूजन
बड़े पैमानेपर खूनका बहना
गम्भीर किस्मके संक्रमण
गर्भाशयका निकाल दिया जाना

12 सप्ताहके बच्चेका गर्भपात करते वक्त टेनाकुलमके द्वारा गर्भाशयके द्वारको सुरक्षात्मक ढंगसे कसा जाता है तथा यह पता लगानेके लिये कि गर्भाशय वास्तवमें कितना गहरा और बड़ा है। ध्वनि यन्त्र लगाके फिर हटाया जाता है।

जिन बच्चोंकी हत्या हुई, उन बच्चोंके अंग कपमें दिखाये गये हैं।

(i)

गर्भपातमें जिन शिशुओंकी हत्या की गयी, उनके दृश्य (i) व (ii)

(चित्र-संख्या (i)

(चित्र-संख्या (ii)

गर्भपातमें मृत बच्चोंके चित्र (i),(ii),(iii)

(i)

(ii) गर्भपातमें मारे गये शिशुओंके चित्र नं० (i) व (ii)

गर्भपातके बाद शिशुके टुकड़े-टुकड़े दिखाये गये हैं।

गर्भपात या भ्रूण–हत्याकी विधियाँ

गर्भपातको अधिकांश व्यक्ति शल्य–क्रिया न मानकर एक साधारण–सी सफाई मानते हैं। आज समाजमें निरन्तर व्यभिचार फैलता जा रहा है, क्योंकि गर्भपात सरकारद्वारा समर्थन प्राप्त एक ऐसा तरीका है, जिससे व्यभिचारी लोगोंकी वासना और अनैतिकतापर पर्दा पड़ रहा है।

जैसा कि भ्रूणके विकास क्रमसे आप समझ गये होंगे कि गर्भमें जीवका अस्तित्व प्रथम क्षण अर्थात् अण्डाणु और शुक्राणुके संयोगसे ही आ जाता है। जबतक माँको यह पता चलता है कि वह गर्भवती है, तबतक उसकी कोखके शिशुका दिल धड़क रहा होता है। इसलिये अबोर्शनमें एक जीवित प्राणीकी हत्या अनिवार्य है।

अबोर्शन करवानेवाली महिलाएँ यदि अबोर्शन करते हुए किसीको देख लें तो उनको पता चले कि किस तरह एक जीवित प्राणीको टुकड़े–टुकड़े करके निकाला जाता है। कभी हाथ निकलता है तो कभी पाँव निकल रहा है, कभी पसलियाँ निकल रही हैं तो कभी आँखें और मस्तिष्क। अन्तमें यह कार्य करनेवाला चिकित्सक निकले हुए अंगोंको पुनः देखता है कि कहीं कोई अंग अन्दर तो नहीं छूट गया। इस प्रकार बड़ी निर्ममता व निर्दयताके साथ यातना दे–देकर गर्भस्थ शिशुकी हत्या की जाती है। यदि इस बीभत्स तरीकेका पता किसी माँको हो तो वह अपने शिशुका अबोर्शन करवानेके लिये कभी तैयार नहीं हो।

जन सामान्यको अबोर्शनसे होनेवाले खतरोंके बारेमें भी कोई जानकारी नहीं होती है, अन्यथा वह गर्भपातको अपनानेकी जगह संयम, शील, ब्रह्मचर्यव्रत या परिवार–नियोजनके तरीकोंको अपनाने लगे। जब कोई महिला अबोर्शन करवाने आती है तो वह अक्सर इसके लिये दृढ़ निश्चय करके ही आती है और कितना ही समझानेपर भी वह अपना इरादा नहीं बदलती है, क्योंकि शल्य–क्रियाको आँखोंसे देखे बिना और खतरेको भुगते बिना सब कुछ समझमें आना बहुत मुश्किल होता है।

वैसे तो विभिन्न तरीके अबोर्शन करनेके लिये चिकित्सकोंद्वारा इस्तेमाल किये जाते हैं परन्तु चूषण व निष्कासन (Suction Evacuation) तथा फैलाव व निष्कासन (Dialatation & Curettage (D. & C.) और अतिसांद्र लवण (Hypertonic Saline) विधियाँ भारतमें ज्यादा उपयोगमें लायी जाती हैं। विभिन्न विधियोंका संक्षेपमें वर्णन आगे दिया जा रहा है।

गर्भपातकी विधियाँ

पहले बारह सप्ताहमें

1. चूषण व निष्कासन–विधि
2. फैलाव व निष्कासन–विधि
3. प्रोस्टाग्लेण्डिन्स

बारहसे बीस सप्ताहतक

1. अतिसान्द्र लवण या एमक्रेडिल
2. प्रोस्टाग्लेण्डिन्स
3. ऑक्सीटोसिन
4. हिस्टरोटोमी (मिनि सिजेरियन)

(अ) प्रथम बारह सप्ताहमें प्रयोग की जानेवाली विधियाँ—

1. चूषण व निष्कासन (Suction Evacuation) **विधि—इस विधिमें एक प्लास्टिक या धातुकी बनी नलीको गर्भाशयमें डालकर एक चूषण मशीन** (Suction Machine) **से चूषण** (Suction) **किया जाता है। इससे गर्भमें स्थित भ्रूण नलीद्वारा मशीनमें चला जाता है। इस विधिमें मशीन बच्चेको वैसे ही बाहर निकाल लेती है, जैसे मशीनसे कीचड़ बाहर निकाला जाता है।**

चित्र—गर्भपातकी चूषण एवं निष्कासन (Suction & Evacuation) विधि

ऐसेमें भ्रूण तड़प-तड़पकर मर जाता है और टुकड़े-टुकड़े होकर जारमें इकट्ठा हो जाता है। कभी-कभी विपरीत दबावके कारण गर्भाशय भी उलटा होकर बाहर आ सकता है, जिससे अत्यधिक पीड़ा व रक्तस्राव हो सकता है।

चित्र—चूषण एवं निष्कासन-विधिसे गर्भपातके बाद गर्भस्थ शिशु

2. फैलाव व निष्कासन-विधि (Dialation & Curettage, D. & C.)—**यह सर्वाधिक प्रचलित विधि है। इसमें पहले गर्भाशयके मुखको हेगार डायलेटर या लेमिनेरिया टैन्टके द्वारा चौड़ा किया जाता है। इसके पश्चात् गर्भस्थ शिशुके अंगोंको तोड़-तोड़कर बाहर निकाला जाता है, जिससे होनेवाली पीड़ा कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है। ......काश! गर्भस्थ शिशु बोल पाता! हाथ तोड़ते समय, पैर काटते समय व गर्दन उड़ाते समय होनेवाली वेदना वह शिशु ही जानता है, माँ तो नहीं।**

चित्र—फैलाव एवं निष्कासन (Dialatation & Currettage-D & C) द्वारा गर्भपात

गर्भाशयसे गर्भको काट-काटकर निकालते समय कभी-कभी बच्चेदानीमें छेद हो सकता है और आँतें व अन्य अंग भी कटकर बाहर आ सकते हैं। अत्यधिक रक्तस्राव हो सकता है और माँकी जानको खतरा भी हो सकता है। कभी-कभी ऐसी अवस्थामें वह महिला पुनः माँ नहीं बन सकती है। इस प्रकार इस ऑप्रेशनमें जितनी यातना गर्भस्थ शिशुको होती है, वही माँको भी हो सकती है। यह ऑप्रेशन माँके लिये खतरनाक हो सकता है।

चित्र—फैलाव एवं निष्कासन (D & C) विधि द्वारा गर्भपातके पश्चात् गर्भस्थ शिशु

3. प्रोस्टाग्लेण्डिन्स (Prostaglandins)—**यह औषधि गोलीके रूपमें खानेसे, योनिमें रखने या इंजेक्शनमें लेनेसे गर्भाशयमें तीव्र संकुचन होता है। इससे गर्भस्थ शिशुका अपरा या अवल**

(प्लेसेन्टा) गर्भाशयकी दीवारसे अलग हो जाता है और गर्भस्थ शिशुके खूनका दौरा रुक जाता है तथा उसकी दम घुटनेसे मृत्यु हो जाती है। इसीके साथ वह गर्भाशयका मुख खुलनेके कारण गर्भाशयसे बाहर आ जाता है।

इस विधिमें भी माँको अत्यधिक पीड़ा गर्भाशयके संकुचनसे होती है। कभी-कभी गर्भाशय फट भी सकता है, जिससे माँकी तुरन्त मृत्यु हो सकती है। अत्यधिक रक्तस्राव भी हो सकता है।

(ब) बारहवेंसे बीसवें सप्ताहतक प्रयोग की जानेवाली विधियाँ—

अब चूँकि गर्भस्थ शिशु बड़ा हो जाता है और उसकी अस्थियाँ मजबूत व पूर्ण विकसित हो जाती हैं, उसे डी. एंड सी. द्वारा काट-काटकर निकालना संभव नहीं रहता। अतः उसे अब रसायनोंद्वारा (बिना काटे) पूर्णरूपसे गर्भाशयसे बाहर निकालना पड़ता है।

1. अतिसान्द्र लवण या एमक्रेडिलद्वारा (Hypertonic Saline or Emcradil)—इस विधिमें एक लम्बी सुई माताके पेटमें चुभोकर गर्भाशयमें अतिसान्द्र लवण या एमक्रेडिल नामक रसायन डाला जाता है। इन औषधियोंके प्रभावसे बच्चा गर्भाशयके भीतर ही घुट-घुटकर दम तोड़ देता है। रसायनोंसे गर्भाशयमें अतिरिक्त दाब पैदा होता है, जिससे माताको अत्यधिक वेदना होती है और गर्भाशयका मुख धीरे-धीरे खुलने लगता है। मुख पूरा खुल जानेपर मृत शिशु गर्भाशयसे बाहर आ जाता है। कभी-कभी इस विधिमें अत्यधिक रक्तस्राव हो जाता है। इससे हृदयकी कमजोरी (Congestive Cardiac Failure) और रक्तस्रावकी बीमारी (D.I.C.) इत्यादि सम्भव है।

चित्र—अतिसान्द्र लवण विधिसे गर्भपातके पश्चात् मृत शिशु

2. प्रोस्टाग्लेण्डिन्स (Prostaglandins)—इन औषधियोंको गर्भाशयके मुखसे एक नलीद्वारा गर्भाशयमें डाला जाता है, जिससे तीव्र संकुचनसे बच्चेदानीका मुख खुल जाता है और बच्चा बाहर आ जाता है।

इस विधिमें कभी-कभी दर्द धीरे-धीरे शुरू होकर सामान्य प्रसवके रूपमें भी बच्चेका जन्म हो जाता है और जीवित बच्चा गर्भाशयसे बाहर आकर तड़प-तड़पकर मरता है।

प्रोस्टाग्लेण्डिनका उपयोग इन्जेक्शन (Injection) के रूपमें भी किया जाता है।

3. ऑक्सीटोसिन (Oxytoxin)—इस हार्मोनको इन्जेक्शनके रूपमें इस्तेमाल करनेपर गर्भाशय संकुचन करने लगता है, जिससे बच्चा अपने स्थानसे विस्थापित हो जाता है और गर्भाशयका मुख खुल जाता है। प्रसव-पीड़ा धीरे-धीरे बढ़कर बच्चेको बाहर निकाल देती है।

4. हिस्टरोटोमी (Hysterotomy)—इस विधिमें बच्चेको सिजेरियन सेक्शनके समान ही ऑपरेशन करके निकाला जाता है।

उपर्युक्त चारों ही विधियोंमें बच्चा सम्पूर्ण रूपसे ही बाहर आता है व कभी-कभी जीवित भी रह जाता है और बाहर आकर ही तड़प-तड़पकर दम तोड़ता है।

गर्भस्थ शिशुकी यह वेदना उसी प्रकार है, जिस प्रकार जलकी मछलीको पानीसे बाहर निकाल देनेपर वह तड़पती है। जिस प्रकार वह भूमिपर उछल-उछलकर अपने प्राण त्याग देती है, ठीक इसी प्रकारसे गर्भस्थ शिशुकी मृत्यु होती है। अपनी ही सन्तानको इस प्रकार मरवा देनेवाली नारी व उसकी करतूतोंके लिये कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया जाय—समझमें नहीं आता है। ‘‘*जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी*’’ शायद आजकी ये माताएँ अपने-आपको ठीक इसके उलटा सिद्ध करनेपर तुली हुई हैं।

दक्षिण-पूर्व अमेरिकामें ऐसी अनेकों गर्भपात क्लीनिक काम कर रही हैं।

अजन्मे बच्चोंकी तरह इसकी शिकार औरतें भी हैं, जो हजारों-लाखोंकी तादादमें अपने गर्भाशयोंको छेदित रोगी और नष्ट करवा चुकी हैं। ऐसी एक महिलाका चित्र।

गर्भपातसे होनेवाले खतरे

(१) अत्यधिक रक्तस्त्रावसे माँकी मृत्यु हो सकती है।

(२) भविष्यमें बच्चे होनेकी सम्भावना कम हो जाती है।

(३) बच्चेदानी कमजोर हो जानेसे पुनः गर्भपात सम्भव है।

(४) भविष्यमें बच्चा कमजोर और अपंग हो सकता है।

(५) मासिक धर्ममें खराबी, कमरदर्दकी शिकायत बढ़ जाती है।

अधिकांश स्त्रियाँ जो कमरके दर्द, बुखार व श्वेत प्रदरकी शिकायतसे उपचारके लिये आती हैं, उनमें अधिकतर पूर्वमें गर्भपात करायी होती हैं। उनकी पीड़ाका मुख्य कारण पूर्वका गर्भपात ही होता है। भावी पीड़ाओंसे बचनेके लिये महिलाओंको चाहिये कि वे प्रकृतिके नियमके विरुद्ध कभी न जायँ और जो संतान उनके गर्भमें पल रही है, उससे छुटकारा पानेका प्रयास कभी न करें। गर्भपातकी कुल्हाड़ी आप अपने बच्चेपर ही नहीं, अपने-आपपर भी चला रही हैं।

Benard nathenson:—**अजन्मा बच्चा बिना किसी अपवादके एक मानव है, जो हम सबसे अभिन्न है और हमारे समाजका एक अभिन्न अङ्ग है। कभी भी जीवित मानवकी हत्या करनेसे तो सामाजिक समस्या हल नहीं हो जाती। मैं विश्वास करता हूँ कि इस गर्भपातरूपी हिंसाका सहारा लेना समाजका घोर नैतिक पतन है। मैं इस बातपर विश्वास नहीं करता हूँ कि अमेरिकी लोग, जिन्होंने चन्द्रमापर आदमी भेज दिया, इस हिंसाके अतिरिक्त कोई और बेहतर समाधान नहीं ढूँढ सकते। मैं सोचता हूँ कि अब हम सबको, यहाँ अपने-आपको एक अथक प्रयास करनेके लिये समर्पित करना चाहिये। ऐसे बेहतर समाधानके लिये—जिसमें प्यार, करुणा और मानव-जीवनकी प्राथमिकताका समान मिश्रण हो।**

अन्तमें मुझे यह कहना है कि इस हत्याको यहाँ और अभी रोको!

जबतक हिन्दू-समाज गर्भपात-जैसे महापापसे नहीं बचेगा, तबतक इसका उद्धार मुश्किल है; क्योंकि अपना पाप ही अपने-आपको खा जाता है। अगर यह समुदाय अपनी उन्नति और वृद्धि चाहता है तो इस घोर महापापसे, ब्रह्महत्यासे दुगुने पापसे बचना चाहिये। एक भाईने हमें बताया कि गत वर्ष भारतवर्षमें लगभग इक्कीस लाख गर्भपात किये गये! ऐसी लोक-परलोकको नष्ट करनेवाली महान् हत्यासे समाजकी क्या गति होगी, इसे भगवान् ही जाने। धर्मपरायण भारतवर्षमें कितना धर्मविरुद्ध काम हो रहा है, इसका कोई पारावार नहीं है। इसका परिणाम बड़ा भयङ्कर होगा। इसलिये समय रहते ही चेत जाना चाहिये। हमारा उद्देश्य किसीकी निन्दा करना, किसीको नीचा दिखाना नहीं है। हमारा यह कहना है कि मनुष्य-शरीरमें आकर कम-से-कम गर्भपातसे तो बचें। जिस मनुष्य-शरीरको इतना दुर्लभ बताया गया है, उस मनुष्य-शरीरमें जीवको न आने देना, जीवको ऐसा दुर्लभ शरीर न मिलने देना कितना महान् पाप है। ऐसे महापापसे बचो।

—परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

गर्भस्थ कन्याओंकी हत्यासे मानवजाति खतरेमें

—प्रह्लाद ब्रह्मचारी

ईश्वरकी दृष्टिमें स्त्री-पुरुषमें कोई भेद नहीं है। उसमें भी स्त्रीको ईश्वरने विशेषरूपसे प्रेममयी, सेवामयी तथा करुणामयी बनाकर भेजा है। स्त्री-जाति सम्पूर्ण जगत्‌में सृष्टिकी उत्पत्ति तथा पालनकी विशेष भूमिका निभानेवाली है, किन्तु वर्तमान समयमें देखा जाय तो जितना स्त्रियोंपर अत्याचार हो रहा है, उतना अन्यपर नहीं। वास्तविकता तो यह है कि कोमल भावनावाली वह देवी मूक मूर्ति-सी अत्याचार सहन करती हुई जीवन जीनेको विवश कर दी गयी है।

वर्तमान समयमें भ्रूण-परीक्षण कन्याओंके लिये अभिशाप सिद्ध हो रहा है। उन्हें गर्भावस्थामें ही मारा जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप कन्याओंकी संख्या इतनी तेजीसे घट रही है, जिससे सम्पूर्ण मानवजाति खतरेमें पड़ती हुई दिखलायी पड़ रही है। यदि गर्भस्थ कन्याओंकी हत्या इसी तरह होती रही तो मनुष्य-अस्तित्वके लिये संकट खड़ा हो जायगा। गर्भस्थ कन्याकी हत्याकी सोचको जन्म देनेवाली सामाजिक कुरीतियों—दहेज, अशिक्षा आदिको भी नजरन्दाज नहीं किया जा सकता है।

आज बड़े नगरों और महानगरोंमें चिकित्साके नामपर गली-गलीमें ऐसे क्लिनिक दिखायी पड़ते हैं, जिसमें कुछ महिला चिकित्सक, दलालों या रिक्शेवालोंके माध्यमसे भोली-भाली महिलाओंको फँसाकर भ्रूण-परीक्षणका कुकृत्य करती हैं। इतना ही नहीं, भ्रूण-परीक्षणमें यदि लड़की आती है तो उसका गर्भपात करा देती हैं।

यद्यपि धर्मशास्त्रोंके अनुसार दो माहके गर्भका चाहे लड़का हो या लड़की, इसका पता नहीं लग सकता है और न कोई अल्ट्रासाउण्ड ही दो माहके गर्भका लिङ्ग निर्धारण कर सकता है। किन्तु चन्द रुपयोंके लोभमें महिला-चिकित्सक महिलाओंको कन्या होनेकी झूठी खबर देकर उनका गर्भपात करा देती हैं। यह कैसी विडम्बना है कि आज एक पढ़ी-लिखी महिला-चिकित्सक ही अपनी ही स्त्री-जातिके गर्भमें पल रही निरपराध कन्या-भ्रूण (भावी स्त्री)-की हत्या बड़ी ही निर्दयताके साथ कर रही है। यदि स्त्री-जातिका ही स्त्री-जातिके साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार है तो दूसरेसे क्या उम्मीद की जा सकती है।

कन्या-भ्रूणोंकी लगातार हत्यासे कन्याओंकी संख्या बड़ी तेजीसे घटती जा रही है। कन्या-भ्रूणकी हत्यामें पुरुषोंकी भी सहभागिता कम नहीं है। प्रायः ऐसा सुननेमें आता है कि गर्भ-परीक्षणसे कन्या-भ्रूणकी जानकारी होनेपर पुरुष अपनी पत्नीपर अनेक प्रकारके दबाव डालकर गर्भपात करानेके लिये विवश करता है। ऐसे पतियोंकी भी एक स्वरसे भर्त्सना करनी चाहिये।

उत्तर प्रदेश सरकारने भ्रूण-परीक्षणपर रोक लगा दिया है। मेरा सरकारी तन्त्रसे भी अनुरोध है कि सरकार ऐसे अमानवीय कुकृत्य करनेवाले चिकित्सकोंको कड़ी-से-कड़ी सजा दे तथा नागरिकोंसे अनुरोध है कि इस कानूनके अनुपालनमें पूरा सहयोग करें।

॥ श्रीहरिः ॥

गर्भपात—कुछ विद्वानोंकी दृष्टिमें

गर्भपात मानवताके नामपर एक घिनौना कलङ्क है। यह एक सोची-समझी, सुनियोजित, क्रूर व नृशंस हत्या है, जिसे अपने ही माँ-बाप अपने जीते-जागते शिशुको निर्ममतापूर्वक उसके टुकड़े-टुकड़े करवाकर सम्पन्न कराते हैं। गर्भपात एक ऐसा हृदय-विदारक हत्याकाण्ड है, जिसे देखकर स्वयं हत्यारेके मनमें भी ग्लानि उत्पन्न हो जाती है। आज विज्ञान भी निर्विवाद रूपसे सिद्ध कर चुका है कि जबतक माँको अपने गर्भवती होनेका आभास होता है, तबतक उसकी कोखमें पल रहे बच्चेका दिल भी धड़कने लगता है। गर्भपात चाहे कितना भी जल्दी कराया जाय, उसमें एक जीवित शिशुकी हत्या निर्विवाद व अनिवार्य रूपसे होती ही है। विदेशोंमें हुए अनुसंधानोंके अनुसार गर्भपात करानेवाली महिलाओंमेंसे लगभग एक तिहाई महिलाएँ कभी संतान पैदा नहीं कर पातीं। उनका शरीर रोगोंका म्युजियम बन जाता है। केवल भारतवर्षमें अनुमानतः 5 लाख औरतें प्रतिवर्ष गैरकानूनी गर्भपातोंद्वारा उत्पन्न हुई समस्याओंसे मरती हैं। शास्त्रोंमें गर्भहत्यारिणी स्त्रीके सामने भोजनतक करनेको मना किया गया है। अतः मानवका अपनी ही संतानको क्रूरतापूर्वक गर्भमें ही कटवा डालना कहाँतक उचित है?

—श्रीगोपीनाथ अग्रवाल, जन-कल्याण संस्था, डी-१२/३ मॉडल टाउन, दिल्ली—११०००९

भ्रूण-हत्या मानव-हत्या है। शुक्र और अण्डके मिलनेके साथ ही जीवन प्रारम्भ हो जाता है। बच्चेके जन्मके पूर्व किसी भी अवस्थामें उसे मार डालना गर्भपातकी श्रेणीमें आता है। एक निरपराध गर्भस्थ शिशुको चाकुओंसे काट-काटकर उसके मांस एवं खूनको अस्पतालकी नालियोंमें बहा देना कौन-सा मातृत्व है? यह कैसी मानवता है? वास्तवमें अपना बच्चा अपना ही स्वरूप है। क्या हम अपने १-२ सालके बच्चेके मृत्युकी कल्पनासे ही नहीं डर जाते? फिर गर्भस्थ शिशुको मार डालने-जैसा जघन्य पाप हम कैसे कर डालते हैं। अपने शिशुकी उम्रकी गणनाका मानदण्ड हमें बदलना होगा। आजसे हमें अपने बच्चेका जन्म-दिन मनाते समय उसकी आयु एक साल 9 महीने बतानी पड़ेगी।

—डॉ० श्यामसुन्दर सोनी, एम० बी० बी० एस० (आर० यू०), एम्० डी० (अल्ट० मेडिसिन),
डी० आई० (ब्रिटिश इंस्टीट्यूट ऑफ होमियोपैथी इंगलैण्ड)

गर्भपातकी समस्यासे पूरे विश्वमें हाहाकार मच गया है। भारतवर्षमें भी यह घृणित हिंसाका ताण्डव नित्य-प्रति बढ़ता जा रहा है। विश्वके सभी धर्माचार्यों और महापुरुषोंने इस कुकृत्यकी घोर निन्दा की है। सरकारका प्रोत्साहन और गर्भपातके वैज्ञानिक सुगम उपाय, बढ़ती महँगाई, दहेज-प्रथा आदिके कारण भी गर्भपातका व्यापार खूब गर्म हुआ है। पढ़े-लिखे समाजने तो इसको आधुनिक सभ्यताका आवश्यक अंग मान लिया है। इसका एक बड़ा कारण समाजमें बढ़ती हुई नास्तिकता तथा टी०वी०, वी०डी०ओ० आदिके द्वारा भोग-विलासको प्रोत्साहन दिया जाना भी है। गर्भ-स्थापन होनेपर उसमें जीव नहीं होता, केवल एक मांसका लोदा होता है, इस गलत आम धारणाने भी गर्भपातको प्रोत्साहन दिया है। गर्भपातके अनेक कारणोंमें आजकलके युवक-युवतियोंका संतानको अपने आमोद-प्रमोदमें बाधक समझना भी है। गर्भपातकी समस्यासे मुक्तिके लिये हमें इन सामाजिक धारणाओंको बदलना होगा।

डॉ० सुराणा, 'सोसाइटी फॉर प्रोटेक्शन ऑफ अनवार्न चाइल्ड'
23, कपिल विहार, प्रीतमपुरा, मेन रोड, नयी दिल्ली—34

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियोंसे गर्भपात मानवतापर कलंक है। हिंसापर आधारित कोई भी समाज न प्रगतिशील हुआ है न हो सकता है। आज समाजमें अनेकों मानसिक रोगोंमें गर्भपात एक गम्भीर रोगके रूपमें बढ़ता जा रहा है। आप सबको इसका उचित उपचार शीघ्र-से-शीघ्र करना होगा। बहुत कम लोग जानते हैं कि हमारा जीवन जन्मकी घड़ीसे नहीं गर्भस्थापनकी घड़ीसे प्रारम्भ होता है। हमारे पुराणोंने हजारों साल पहले अभिमन्यु और परीक्षित्-जैसे अनेकों प्रमाणोंसे इसे सिद्ध कर दिया है। आजकल वैज्ञानिक प्रमाणोंसे भी अल्ट्रासाउन्डद्वारा शिशुके अंगोंके विकास और क्रियाको भली-भाँति देखा जा सकता है। गर्भपात एक असहाय प्राणीकी बर्बर हत्याकी करुण कहानी है और सामाजिक पतनकी चरम सीमाका द्योतक है। गर्भपातके पापसे स्वयं बचें और दूसरोंको भी बचायें, इसीमें कल्याण है।

—प्रो० बी० एन्० टण्डन

भारतवर्षमें परिवार-नियोजन व गर्भपातका कार्यक्रम विदेशोंद्वारा थोपा गया है। भारतमें आज इम्पोर्टेड आइटमका फैशन है। अतः जन-साधारण इधर ध्यान नहीं दे रहा है। गर्भपातके तुरन्त बाद होनेवाली जटिल बीमारियोंसे नारी-समाजको परिचित करना होगा। इस महापापका दुष्परिणाम नारियोंके स्वास्थ्यपर ही गिरनेवाला है। अतः नारी जागृत होकर भ्रूणहत्या न कराने और इस महापापको रोकनेका संकल्प ले तथा मानव-मूल्योंमें आती हुई गिरावटको रोके। आज गर्भपातको साधारण प्रक्रिया समझकर माताएँ अपने ही कोखमें पलनेवाले शिशुकी निर्मम हत्या करा रही हैं। यह मानवताकी हिंसा समाजको कहाँ गिरायेगी, कहा नहीं जा सकता। गर्भपातके रूपमें घर-घर बूचड़खाने बन गये हैं। नारी ही इस हिंसाको रोक सकती है। अतः राष्ट्रको गर्भपातके दुष्परिणामोंसे रोकनेके लिये नारीके वास्तविक स्वरूपको जागृत करना होगा

—मोतीचन्द बिन्नानी, चेन्नई (मद्रास)

मानवताका चरमोत्कर्ष तो पितृत्व और मातृत्वमें ही है। किन्तु विषय-भोगकी सुविधाके लिये स्वार्थमें अन्धे होकर अपनी अजन्मी संतानको गर्भमें ही मार डालनेवाले माता-पिता तो साक्षात् प्रेत और पिशाच ही हैं। ऐसे पिशाचोंकी संगतिसे भी पुण्योंका क्षय हो जाता है। कहाँ तो नवरात्रमें देवी मानकर उनकी पूजा करना और कहाँ गर्भमें पनप रही अपनी ही कन्याकी निर्ममतापूर्वक हत्या कर डालना! यह घोर पाप तो गङ्गाजलसे भी नहीं धोया जा सकता है। कन्याओंपर तो कसाई भी दया करते हैं। कन्या-भ्रूणके हत्यारे तो कसाइयोंसे भी बड़े क्रूर हैं। सोचो! तुम अपनी गर्भस्थ निरीह कन्याके सहारे नहीं बने तो तुम्हारा कुलदीपक तुम्हारा सहारा क्यों बनेगा? भगवती पार्वती, सीता, सावित्री, अनसूयाने अपने पितृकुलके यशको सर्वत्र प्रकाशित और अमर किया है। कौन कह सकता है कि बेटे ही नाम रोशन करेंगे, बेटियाँ नहीं। अभागे माता-पिताओ! फिर किस लोभमें भ्रूण-हत्या करके गर्भमें ही कन्याओंका गला घोंट रहे हो और सृष्टिके सर्वनाशके कारण बन रहे हो।

—पंचखण्ड पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी श्रीधर्मेन्द्रजी महाराज

समाजपर दिन-प्रतिदिन कसता जा रहा गर्भपातका शिकंजा मानव-समाजके लिये बहुत बड़ा खतरा है। गर्भपातका दुष्परिणाम इतना भयानक है कि वह गर्भ-हत्यारोंका जन्म-जन्मान्तरतक पीछा करता है। जिन दम्पतियोंको इस जन्ममें संतान-सुख प्राप्त नहीं है, निश्चय ही वे पूर्व जन्ममें किये गये

किसी भ्रूण-हत्याके जघन्य अपराधका दण्ड भोग रहे हैं—ऐसी धर्मशास्त्रोंकी मान्यता है। आज बढ़ती हुई कन्या-भ्रूणकी हत्याका मूल कारण दहेज है, जिसके भयसे लोग कन्या-जन्मको अपने ऊपर आयी हुई मुसीबत समझकर कन्या-गर्भकी हत्या कराते चले जा रहे हैं। कन्याओंकी गर्भमें ही बढ़ती हुई हत्यासे सृष्टिका सन्तुलन बिगड़ जानेकी प्रबल सम्भावना बढ़ती जा रही है। अगर इस अपराधको तुरन्त नहीं रोका गया तो मानव-समाजके पतनको रोकना असम्भव होगा।

—गोरक्षपीठाधीश्वर महन्थ श्रीअवेद्यनाथजी महाराज

आजका युग विज्ञानका युग कहलाता है और यह सत्य भी है कि विज्ञानके आविष्कारोंने सारे जगत्‌को एक देहातकी तरह सीमित बना दिया है। विज्ञानका उपयोग महत्त्वपूर्ण है। यदि उसका दुरुपयोग हो तो उससे बहुत बड़ी हानि भी सम्भव है। आजका भौतिकवाद विज्ञानका दुरुपयोग ही है। गर्भमें ही शिशुओंकी हत्या इस विज्ञानकी ही देन है। आश्चर्य है! मानव ही मानवकी हत्या कर रहा है और वह भी अपने ही आत्मीय शिशुकी। सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि यह हत्या मातृशक्तिके द्वारा सम्पन्न हो रही है। नारी-जाति ही यदि शिशुका पालन-पोषण न कर उसकी हत्या करें तो फिर उसे कौन बचायेगा? गर्भपातद्वारा शिशु-हत्या परमाणु हमलेसे कम नहीं है। आजतक इस धरतीपर दो विश्वयुद्ध हुए हैं। कुछ दशकों पूर्व विश्वयुद्धोंमें जो हिंसा हुई, वह वर्तमानमें गर्भपातके द्वारा हो रही मानव-हिंसाकी तुलनामें नगण्य है। भारत-जैसे पवित्र देशमें गर्भपातकी संख्याका अनुमान इसी बातसे लगाया जा सकता है कि गर्भपातसे इतनी हत्या होती है, जिससे राजस्थान-जैसे प्रदेश समाप्त हो सकते हैं। फिर भी आजका सभ्य समाज उसे सभ्यताका रूप दे रहा है। यह एक घिनौना कुकृत्य है। समाजके माथेपर लगा यह घोर कलङ्क है। इसका दुष्परिणाम स्वयं समाजको ही भोगना पड़ेगा। सभीका यह पुनीत कर्त्तव्य है कि यथाशक्ति इस शीत विश्वयुद्ध-जैसी स्थितिका डटकर मुकाबला करें।

—श्रीप्रह्लाद ब्रह्मचारी

नारीकी पूर्णता माँ बननेमें है। वह ममतामयी जननी है। ममताको सुरक्षित रखना नारीका प्रथम कर्तव्य है। महिलाओंको अपने अजन्मी संतानकी रक्षाहेतु समाजके सारे बन्धनोंको तोड़कर सामने आना होगा। इसके लिये माताओंको शिक्षित करना विशेष आवश्यक है। नारी ही अपने दायित्वको समझकर समाजको इस पतनसे बचा सकती है।

—श्रीमती कविता भटनागर

गर्भपातमें न केवल एक निरपराध शिशुकी हत्या होती है वरन् कभी-कभी गर्भवती माँको भी अपनी जानसे हाथ धोना पड़ता है। कन्या-गर्भकी हत्या हिन्दुओंकी संख्या घटानेकी एक साजिश है। पुरुष-वर्ग इसके लिये अधिक जिम्मेदार है। यह महान् चिन्ताका विषय है कि जितने वैध-अवैध गर्भपात होते हैं, उसमें नब्बे प्रतिशतसे ऊपर कन्याओंकी हत्या हो रही है। इस जीव-हत्याको रोकना ही इस समयका सबसे बड़ा धर्म है। इसके लिये हमें चाहे जो भी मूल्य चुकाना पड़े, समाजको बचानेके लिये और अपना आपद्धर्म निभानेहेतु कमर कसकर तैयार होना ही पड़ेगा।

—श्रीमती शैलतनया

अमेरिकाके राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगनने जब गर्भपातपर बनी 'साइलेन्ट स्क्रीम' नामक फिल्म देखी तो इससे वे बहुत प्रभावित हुए। उनका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने इस फिल्मको देखनेका अनुरोध अमेरिकाके प्रत्येक सांसदसे किया। उन्होंने अबोर्शनके कानूनको भी बदलनेकी

इच्छा व्यक्त की। इस फिल्मको लोगोंद्वारा देखे जानेके बाद गर्भस्थ शिशुके जन्म और अधिकारको लेकर यूरोप और अमेरिकामें कई जन-आन्दोलन हुए हैं।

एक समाचारके अनुसार एक बार मदर टेरेसाने अमेरिकी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उनकी पत्नियों तथा बहुत बड़ी संख्यामें श्रोताओंको सम्बोधित करते हुए अमेरिकामें बढ़ती हुई हिंसाका सम्बन्ध भ्रूण-हत्यासे जताया। उन्होंने कहा कि जब हम माँद्वारा अपने ही बच्चेकी हत्याको स्वीकार करते हैं तो कैसे हम दूसरोंको—एक-दूसरेको मारनेसे मना कर सकते हैं? कोई भी देश जो अबोर्शनको स्वीकार करता है, वह अपने नागरिकोंको प्यार नहीं सिखाता बल्कि अपनी इच्छापूर्तिके लिये हिंसाका सहारा लेना सिखाता है।

मदर टेरेसाने काहिरामें होनेवाली (World Population Conference) की पूर्व संध्यापर कहा—'इस संसारमें शान्तिको नष्ट करनेवाला सबसे बड़ा कारण अबोर्शन है। जीवन लेनेका अधिकार केवल ईश्वरको है, जिसने इसे बनाया है। इसके अलावा कोई भी हो—चाहे माँ हो या बाप, डॉक्टर हो या कोई संस्था, सम्मेलन हो या सरकार—गर्भपातसे जीवन लेनेका किसीको अधिकार नहीं है।'

पोप जॉन पॉल—'गर्भपातको आबादी घटानेका नृशंस और पाशविक तरीका मानते हैं।'

पाकिस्तानकी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टोके अनुसार—'इस्लाम गर्भपात करनेकी तबतक कोई अनुमति नहीं देता, जबतक कि माँको गर्भस्थ शिशुसे कोई जानलेवा गम्भीर खतरा न हो।'

महान् दार्शनिक जोसेफ सिटबेलके अनुसार—'कोई भी बच्चा नाजायज नहीं होता, नाजायज होते हैं—उसके माँ-बाप।'

गर्भपात ईश्वर और प्रकृतिके विधानका तिरस्कार

ईश्वर और प्रकृतिके विधानके अनुसार सृष्टिके आरम्भसे ही जीवोंके जन्म और मरण होते चले आये हैं। जन्म-मरणका कार्य मनुष्यके हाथमें नहीं है, प्रत्युत प्रकृतिके हाथमें है। जैसे किसी जीवको मार देना मनुष्यका अधिकार नहीं है, प्रत्युत पाप है। ऐसे ही किसी जीवको जन्म लेनेसे रोक देना भी मनुष्यका अधिकार नहीं है, प्रत्युत महापाप है। मनुष्योंमें भी हिन्दू-जाति सर्वश्रेष्ठ है। इसमें बड़े विलक्षण ऋषि-मुनि, संत-महात्मा, दार्शनिक, वैज्ञानिक पैदा होते आये हैं। जब इस जातिके मनुष्योंको जन्म ही नहीं लेने देंगे तो ऐसे श्रेष्ठ और विलक्षण पुरुष कैसे और कहाँ पैदा होंगे?

—परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

विचार करें

—स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

१. गर्भपातके समान दूसरा कोई भयङ्कर पाप है ही नहीं। संसारका कोई भी श्रेष्ठ धर्म इस महान् पापका समर्थन नहीं देता और न दे ही सकता है। कारण कि यह काम मनुष्यताके विरुद्ध है। क्रूर और हिंसक पशु भी ऐसा काम नहीं करते।

२. संतति-निरोधकी भावनासे मनुष्य इतना निर्दय, क्रूर और हिंसक हो जाता है कि गर्भमें अपनी संतानकी भी हत्या (भ्रूणहत्या या गर्भपात) करनेमें नहीं हिचकता, जो ब्रह्महत्यासे भी दुगुना पाप है।

३. गर्भमें स्थित शिशु अपने बचावके लिये कोई उपाय नहीं कर सकता, प्रतीकार भी नहीं कर सकता, अपनी रक्षाके लिये पुकार भी नहीं सकता, चिल्ला भी नहीं सकता, उसका कोई अपराध अथवा कसूर भी नहीं है। ऐसी अवस्थामें उस निर्बल, असहाय, निरपराध, निर्दोष मूक शिशुकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है।

४. एक कहावत है कि अपने द्वारा लगाया हुआ विषवृक्ष भी काटा नहीं जाता। जिस गर्भको स्त्री-पुरुष मिलकर पैदा करते हैं, उसकी अपने ही द्वारा हत्या कर देना कितनी बड़ी कृतघ्नता है। कसूर (असंयम) तो खुद करते हैं पर हत्या बेकसूर गर्भकी करते हैं, यह कितना बड़ा अन्याय है।

५. गर्भमें आया जीव जन्म लेकर न जाने कितने अच्छे लौकिक तथा पारमार्थिक कार्य करता, समाज तथा देशकी सेवा करता, अनेक लोगोंकी सहायता करता, संत-महात्मा बनकर अनेक लोगोंको सन्मार्गमें लगाता, अनेक तरहके आविष्कार करता आदि-आदि। परन्तु जन्म लेनेसे पहले ही उसकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है, अपराध है।

६. जीवमात्रको जीनेका अधिकार है। उसको गर्भमें ही नष्ट करके उसके अधिकारको छीनना महान् पाप है।

७. जब मनुष्यकी हत्याको बहुत बड़ा पाप मानते हैं और अपराधी मनुष्यको फाँसीकी या आजीवन कारावासकी सजा देते हैं, तो फिर यह गर्भपात क्या है? क्या यह निरपराध मनुष्यकी हत्या नहीं है?

८. गर्भमें आये जीवको अनेक जन्मोंका ज्ञान होता है, इसलिये भागवतमें उसको (ऋषि) ज्ञानी कहा गया है। अतः गर्भपात करनेसे एक ऋषिकी हत्या होती है। इससे बढ़कर और पाप क्या होगा?

९. लोग गर्भ-परीक्षण करवाते हैं और गर्भमें कन्या हो तो उसका गर्भपात करा देते हैं। क्या यह नारी-जातिको समान अधिकार देना है? क्या यह नारी-जातिका सम्मान करना है?

१०. संतति-निरोधके द्वारा नारीके मातृरूपको नष्ट करके उसको केवल भोग्या बनाया जा रहा है। भोग्या स्त्री तो वेश्या होती है। यह नारी-जातिका कितना महान् अपमान है।

११. संतति-निरोधके मूलमें केवल सुखभोगकी इच्छा विद्यमान है। अपनी संतान इसलिये नहीं सुहाती कि वह हमारे सुखभोगमें बाधक है, फिर अपने माँ-बाप, भाई-बहन कैसे सुहायेंगे?

१२. जो माता-पिता अपने बच्चेका स्नेहपूर्वक पालन और रक्षा करनेवाले होते हैं, वे ही अपने गर्भस्थ बच्चेकी हत्या कर देंगे तो किससे रक्षाकी आशा की जायगी।

बैक पेज